गुरु नानक – सबद ६
साचा साहिब साच नाइ भाखिआ भाउ अपार ॥
जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, २

साचा साहिब साच नाइ भाखिआ भाउ अपार ॥
आखहि मंगहि देहि देहि दात करे दातार ॥
फेर कि अगै रखीऐ जित दिसै दरबार ॥
मुहौ कि बोलण बोलीऐ जित सुण धरे पिआर ॥
अमृत वेला सच नाउ वडिआई वीचार ॥
करमी आवै कपड़ा नदरी मोख दुआर ॥
नानक एवै जाणीऐ सभ आपे सचिआर ॥४॥

सार: आत्म-प्रयास की कोशिश चरित्र को संवारती, मानवीय गुणों को बढ़ाती है। अगर कोई व्यक्ति किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करता है, तो उसका फल कई गुना होकर सामने आता है।

साचा साहिब साच नाइ भाखिआ भाउ अपार ॥
सर्वव्यापी चेतना ही सच्ची मालिक है; इसका अस्तित्व अनंत है और इसकी भाषा असीम प्रेम की है।

आखहि मंगहि देहि देहि दात करे दातार ॥
जो निडर होकर, निरंतर प्रेम की खोज करते हैं, उनको सर्वव्यापी चेतना के द्वारा बेअंत बख़्शीशें प्राप्त होती हैं।

फेर कि अगै रखीऐ जित दिसै दरबार ॥
साधकों की ऐसी मंडली की एक झलक देखने के लिए कोई क्या कर सकता है?

मुहौ कि बोलण बोलीऐ जित सुण धरे पिआर ॥
कोई ऐसे कौन से, क्या शब्द बोल सकता है जिनसे प्रेम हो?

अमृत वेला सच नाउ वडिआई वीचार ॥
वह पल उत्तम होता है, जब कोई व्यक्ति सच, आत्म-चिंतन, कृतज्ञता और सोच की अनंत अमृतमय स्थिति में होता है।

करमी आवै कपड़ा नदरी मोख दुआर ॥
इन करमों से ऐसे चरित्र का निर्माण होता है जो ज्ञान के द्वार खोल देता है।

नानक एवै जाणीऐ सभ आपे सचिआर ॥४॥
नानक कहते हैं कि ऐसे गुणों और आत्म-प्रयासों के माध्यम से व्यक्ति अपने सच्चे स्वरूप को समझ सकता है। (४)

तत्व: गुरु नानक कहते हैं कि सच्चाई और प्रेम अस्तित्व की नींव हैं। जो अपने अस्तित्व की पहचान के लिए चिंतन पर ध्यान केंद्रित करते हैं वह सदा सच्चे और प्रेम के मार्ग पर रहते हैं। समूह एक्य के रूप में ये सब मिलकर साधक के लिए रूहानी रोशनी का शानदार क्षण बनाते हैं।

पहलकदमी
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com